

# पूर्ण आनन्द लहरि



पुष्पः - ३

Jul 2015 – Aug 2015

दलं - ५

न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं ।  
न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं ॥



|        |          |              |         |
|--------|----------|--------------|---------|
| தெளிவு | குருவின் | திருமேனி     | காண்டல் |
| தெளிவு | குருவின் | திருநாமம்    | செப்பல் |
| தெளிவு | குருவின் | திருவார்த்தை | கேட்டல் |
| தெளிவு | குருவரு  | சிந்தித்தல்  | தானே!   |



[bhramarAmbika, shri sailam](#)

## Table of Contents:

| #  | Topics                             | Page |
|----|------------------------------------|------|
| 1  | Introduction                       | 5    |
| 2  | Devi AshtAngam                     | 6    |
| 3  | ShaDAkShara vicAram – sUta samhita | 9    |
| 4  | jAbAIOPaniShat                     | 19   |
| 5  | ShaDAkShara mantra japa kramaH     | 27   |
| 6  | ShaDAkSha AvaraNa pUjA             | 31   |
| 7  | brahmarAmbika - shrisailam         | 38   |
| 10 | sadAvidyA anusaMhatiH              | 39   |

॥ शिवादि श्री गुरुभ्यो नमः ॥

## Introduction

In the last issue, we looked at the haMsa vidyA vivaraNam from sUta saMhitA. In this issue we bring the ShaDakShara vicAram chapter from the yajna vaibhava khANDam (vAcika) of sUta samhitA. This chapter explains in detail the manifestation of the sahDakShara mantra, the rishi chandas, nyAsa; the meaning of it; the siddhi kramA and prayOga kramA. In addition, jAbAIOPaniShat from the Shukla yajur vEdA is also included for contextual completeness. In this issue, we have also included the mantra, nyAsa, and AvaraNa pUjA kraMA of ShaDAkshara.

This month is the nija AshADa mAsA and the vArAhi navarAtri should be celebrated as usual during the nijamAsA. We have published the entire vArAhi kramA (including the mantra japa kramA and AvaraNa karma for mahA vArAhi angOpAnga dEvatAs). We hope that it will be helpful for the upAsakAs to perform the vArAhi upAsanA using those compilations.

As always, we caution that the mantrAs, pUja kramAs, and nyAsAs that are included in this issue cannot be taken lightly and readers are strongly advised to check with their Guru's prior to start practicing any of them.

We thank Shri yOGAmbA samEta AtmAnandanAthA (Shri Ramesh Kutticad) for authoring the Q&A section.

Lalithai vEdam sarvam.

Surrendering to the holy pAdukAs of Shri Guru,

प्रकाशाम्बा समेत प्रकाशानन्दनाथ

## देवी मान अष्टाङ्गम्

श्री आदिगुरोः परशिवस्य आज्ञया प्रवर्तमान देवीमानेन षड्विंशत् तत्वात्मक सकल प्रपञ्च सृष्टि स्थिति संहार तिरोधान अनुग्रह कारिण्याः पराशक्तेः ऊर्ध्व भूविभ्रमे नं घ्राण तत्त्व महाकल्पे दं चक्षुस्तत्त्व कल्पे थं त्वक् तत्त्व महायुगे खं सदाशिव तत्त्व युगे दं चक्षु तत्त्व परिवृतौ घं सुद्धविद्या तत्त्व वर्षे – श्री ललितात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका प्रसादसिद्ध्यर्थे यथा शक्ति (जप क्रमं) सपर्याक्रमम् निर्वतयिष्ये ।

|               | JUL 14         | JUL 15           | JUL 16           | JUL 17         |
|---------------|----------------|------------------|------------------|----------------|
| मासे          | ऊं रति         | ऊं रति           | ऊं रति           | ऊं रति         |
| तत्त्व दिवसे  | लं रूप         | वं रस            | शं गन्ध          | षं आकाश        |
| दिन नित्यायां | ऋं त्वरिता     | ऋं शिवदूति       | ऊं वज्रेश्वरि    | उं वह्निवासिनि |
| वासरे         | विमर्शानन्दनाथ | आनन्दानन्दनाथ    | ज्ञानानन्दनाथ    | सत्यानन्दनाथ   |
| घटिकोदये      | च – कार        | त – कार          | य – कार          | अ – कार        |
|               | JUL 18         | JUL 19           | JUL 20           | JUL 21         |
| मासे          | ऊं रति         | ऊं रति           | ऊं रति           | ऊं रति         |
| तत्त्व दिवसे  | सं वायु        | हं वह्नि         | ळं जल            | क्षं पृथ्वि    |
| दिन नित्यायां | ईं भेरुण्डा    | इं नित्यक्लिन्ना | आं भगमालिनि      | अं कामेश्वरी   |
| वासरे         | पूर्णानन्दनाथ  | स्वभावाभानन्दनाथ | प्रतिभानन्दनाथ   | सुभगानन्दनाथ   |
| घटिकोदये      | ए – कार        | च – कार          | त – कार          | य – कार        |
|               | JUL 22         | JUL 23           | Jul 24           | JUL 25         |
| मासे          | ऋं धृति        | ऋं धृति          | ऋं धृति          | ऋं धृति        |
| तत्त्व दिवसे  | अं शिव         | कं शक्ति         | खं सदाशिव        | गं ईश्वर       |
| दिन नित्यायां | अं कामेश्वरी   | आं भगमालिनि      | इं नित्यक्लिन्ना | ईं भेरुण्डा    |
| वासरे         | प्रकाशानन्दनाथ | विमर्शानन्दनाथ   | आनन्दानन्दनाथ    | ज्ञानानन्दनाथ  |
| घटिकोदये      | अ – कार        | ए – कार          | च – कार          | त – कार        |

|               | JUL 26          | JUL 27          | JUL 28           | JUL 29           |
|---------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| मासे          | ऋं धृति         | ऋं धृति         | ऋं धृति          | ऋं धृति          |
| तत्व दिवसे    | घं सुद्धविध्या  | ङं माया         | चं कला           | छं अविद्या       |
| दिन नित्यायां | उं वह्निवासिनि  | ऊं वज्रेश्वरि   | ऋं शिवदूति       | ऋं त्वरिता       |
| वासरे         | सत्यानन्दनाथ    | पूर्णानन्दनाथ   | स्वभावाभानन्दनाथ | प्रतिभानन्दनाथ   |
| घटिकोदये      | य – कार         | अ – कार         | ए – कार          | च – कार          |
|               | JUL 30          | JUL 31          | AUG 1            | AUG 2            |
| मासे          | ऋं धृति         | ऋं धृति         | ऋं धृति          | ऋं धृति          |
| तत्व दिवसे    | जं राग          | झं काल          | जं नियति         | टं पुरुष         |
| दिन नित्यायां | लृं कुलसुन्दरि  | लृं नित्या      | एं नीलपताका      | ऐं विजया         |
| वासरे         | सुभगानन्दनाथ    | प्रकाशानन्दनाथ  | विमर्शानन्दनाथ   | आनन्दानन्दनाथ    |
| घटिकोदये      | त – कार         | य – कार         | अ – कार          | ए – कार          |
|               | AUG 3           | AUG 4           | AUG 5            | AUG 6            |
| मासे          | ऋं धृति         | ऋं धृति         | ऋं धृति          | ऋं धृति          |
| तत्व दिवसे    | ठं पकृति        | डं अहंकार       | ढं बुद्धि        | णं मनस्          |
| दिन नित्यायां | औं सर्वमङ्गला   | औं ज्वालामालिनि | अं चित्रा        | अं चित्रा        |
| वासरे         | ज्ञानानन्दनाथ   | सत्यानन्दनाथ    | पूर्णानन्दनाथ    | स्वभावाभानन्दनाथ |
| घटिकोदये      | च – कार         | त – कार         | य – कार          | अ – कार          |
|               | AUG 7           | AUG 8           | AUG 9            | AUG 10           |
| मासे          | ऋं धृति         | ऋं धृति         | ऋं धृति          | ऋं धृति          |
| तत्व दिवसे    | तं श्रोत्र      | थं त्वक्        | दं चक्षुः        | धं जिह्वा        |
| दिन नित्यायां | औं ज्वालामालिनि | औं सर्वमङ्गला   | ऐं विजया         | एं नीलपताका      |
| वासरे         | प्रतिभानन्दनाथ  | सुभगानन्दनाथ    | प्रकाशानन्दनाथ   | विमर्शानन्दनाथ   |
| घटिकोदये      | ए – कार         | च – कार         | त – कार          | य – कार          |
|               | AUG 11          | AUG 12          | AUG 13           | AUG 14           |
| मासे          | ऋं धृति         | ऋं धृति         | ऋं धृति          | ऋं धृति          |
| तत्व दिवसे    | नं घ्राण        | पं वाक्         | फं पाणि          | बं पाद           |
| दिन नित्यायां | लृं नित्या      | लृं कुलसुन्दरि  | ऋं त्वरिता       | ऋं शिवदूति       |
| वासरे         | आनन्दानन्दनाथ   | ज्ञानानन्दनाथ   | सत्यानन्दनाथ     | पूर्णानन्दनाथ    |
| घटिकोदये      | अ – कार         | ए – कार         | च – कार          | त – कार          |

| पर्व दिनेभ्यः   |             |             |
|-----------------|-------------|-------------|
|                 | America     | India       |
| अमावास्या       | 15 Jul 2015 | 16 Jul 2015 |
| मास सङ्क्रान्ति | 16 Jul 2015 | 17 Jul 2015 |
| पूर्णिमा        | 30 Jul 2015 | 31 Jul 2015 |
| कृष्ण अष्टमि    | 6 Aug 2015  | 7 Aug 2015  |
| कृष्ण चतुर्दशि  | 12 Aug 2015 | 13 Aug 2015 |
| अमवास्या        | 14 Aug 2015 | 14 Aug 2015 |

| अन्य पूजा दिनेभ्यः |             |             |
|--------------------|-------------|-------------|
|                    | America     | India       |
| शुक्ल चतुर्थि      | 19 Jul 2015 | 20 Jul 2015 |
| कृष्ण चतुर्थि      | 3 Aug 2015  | 3 Aug 2015  |

| विशेष पर्व दिनेभ्यः        |             |             |
|----------------------------|-------------|-------------|
|                            | America     | India       |
| AshADha navarAtri ArambhaH | 15 Jul 2015 | 16 Jul 2015 |
| Pancami pUjA               | 20 Jul 2015 | 20 Jul 2015 |
| Dasami pUjA                | 26 Jul 2015 | 26 Jul 2015 |
| vyAsa pUrNimA              | 30 Jul 2015 | 31 Jul 2015 |
| Adi pUraM                  | 20 Jul 2015 | 20 Jul 2015 |

## श्री सूत संहिता यज्ञ वैभव खण्डम् – षडक्षरविचारः

सूत उवाच –

Shri sUtA says -

षडक्षरं प्रवक्ष्यामि समासेन सुशोभनम् ।  
येन संसारविच्छित्तिर्ब्रह्मेन्द्रादिविभूतयः ॥ १

Let me explain the greatness of the beautiful shaDakShara knowing which the cycle of saMsArA is destroyed and states such as brahmA can be reached.

ऋषिर्ब्रह्माऽस्य मन्त्रस्य गायत्रं छन्द उच्यते ।  
देवताऽस्य शिवः साक्षात्सत्यज्ञानसुखाद्वयः ॥ २

The seer for this mantra is brahmA; chandas is gAyatrI; and dEvatA is shiva who is verily the satya jnAnA anantA and advayA (the One).

शक्तिर्महेश्वरी सा च भुवनेशाक्षरं भवेत् ।  
बीजं मायाविशिष्टस्तु शिवः पूर्वोक्तलक्षणः ॥ ३

The artha form of this mantra is the Shakti mAhEshvarI. As explained earlier, the mAyA vishiShtA shiva, bhuvanEshA forms the bljam.

सोऽपि तच्छब्द एव स्यान्त्यासः पञ्चाक्षरैः क्रमात् ।  
अङ्गुष्ठादिकनिष्ठान्तं विन्यसेदक्षरं क्रमात् ॥ ४

That shivA is verily the shabdha brahmA. Using the 5 letters perform the nyAsA on thumb, pointer, middle, ring, and little fingers.

मस्तके च ललाटे च हृदि नाभौ पदद्वये ।  
पुनः पञ्चाक्षरैणैव पञ्चाङ्गं विन्यसेत्क्रमात् ॥ ५

Again, using the 5 letters perform the nyAsA on the crown, forehead, hRudaya, nAbhi, and the feet.

प्रणवं प्रथमं विद्यात् द्वितीयं तु नकारकम् ।  
मकारं तत्परं विद्यात्छिकारां तु ततः परम् ॥ ६

The first letter is praNavA. The second letter is “na”. The next letter is “ma” followed by the letter “shi”.

वकारं पञ्चमं विद्यायकारं षष्ठमेव च ।  
इत्थं षडक्षरं विद्याज्जाबालोपनिषद्गतम् ॥ ७

“va” is the fifth letter and “ya” forms the sixth letter. This is the six letter mantra that is extolled by the jAbAlaupaniṣad.

मन्त्रं साङ्गः समाख्यातो मन्त्रार्थः कथ्यतेऽधुना ।  
सत्यज्ञानपरानन्दस्वरूपस्य शिवस्य तु ॥ ८

The limbs of the mantra was explained and now let us look into the meaning of the mantra. Satya, jnAnA, parAnanda state of shivA (contd)

असंपृक्त्या शिवस्यायं शिवशब्दास्तु वाचकः ।  
नमः शब्दो नमस्कारवाचकः परिकीर्तितः ॥ ९

is referred (without actually touching) by the “shiva” word. The “nama” word refers to bowing.

प्रहृतालक्षणः प्रोक्तो नमस्कारः पुरातनैः ।  
प्रहृता नाम जीवस्य शिवात्सत्यादिलक्षणात् ॥ १०

The wise used to call surrender as namaskArA (bow). The surrender in this mantra indicates that the jivA, although appears different from the satya, jnAnA, Ananta svarUpa shivA

भेदेन भासमानस्य मायया न स्वरूपतः ।  
संबन्ध एव तेनैव सोऽपि तादात्म्यलक्षणः ॥ ११

not because of the true difference between them but because of the illusion created by the mAyA; without which there is really no difference and only a perfect tadatmyA (one and the same).

नित्यसिद्धः शिवः साक्षात्स्वरूपः सर्वदेहिनाम् ।  
तस्माद्बुभुत्सोर्जीवस्य नोपादेयं हितं सदा ॥ १२

(sUtA now starts explaining the meaning each letter)

For all humans, shivA is the nityasiddha (the truth). For those jlvAs who seek to know the real svarUpA, the beneficial understanding would be the usage of “not”.

न हेयमहितं तद्वद्वस्तुतो न प्रतीतितः ।  
एवं विद्यान्नकारार्थे मकारार्थ उदीर्यते ॥ १३

(Just like the upanishAds utilized the nEti nEti to eliminate those that are external to ultimately arrive at the resulting brahman. Also refer to nirvana shatkam by Adishankara)

This “not” is indicated by the “na” kAram.

मकारो ममशब्दार्थो लुप्तस्त्वेको मकारकः ।  
व्यावहारिकदृष्ट्याऽयं नमस्कारः प्रकीर्त्यते ॥ १४

The “ma” kArA really indicates the “mama” kArA which means “mine”. By removing one of the “ma” in the “mama” kArA and attaching it to the “na” kArA, it appears as “nama” and denotes the bowing.

तस्माच्चतुर्थीशब्दस्तु प्रोच्यते न हि वस्तुतः ।  
ओङ्कारशब्दः सर्वार्थवाचकः परिकीर्तितः ॥ १५

By using the fourth conjunction, it refers bowing towards shivA. However, there is truly not the fourth conjunction in this mantra. The praNavA refers to everything that exists.

प्रयोगादेव सर्वत्र सर्वार्थः शिव एव हि ।

तस्माच्छिवस्य पूर्णस्य प्रणवो वाचकः स्मृतः ॥ १६

Since this praNava (refer to the praNava vicArA chapter in sUta samhita) is used everywhere to denote everything, and since shivA is everything, this praNava expression expresses verily shivA Himself.

वाच्यवाचकभावश्च लक्ष्यलक्षणाताऽपि च ।

अन्योन्यताऽपि नास्त्येव परमार्थनिरूपिणे ॥ १७

The signifier / signify ; goal / quality relationship cannot prove/establish the paramArthA.

अभावादेव सर्वस्य शिवादन्त्यस्य सर्वदा ।

अस्ति नास्ति मृषा भाति न भातित्यादि मायया ॥ १८

Because there is just nothing other than shivA ever. “Exists”, “Doesn't exist”, “Illusionary appearance”, “Doesn't exist” – all due to mAyA (contd)

कल्पितं चित्सुखानन्तपरमात्मशिवात्मनि ।

मायातत्कार्यमप्यस्माच्छिवात्यादिलक्षणात् ।

प्रत्यक्षसिद्धान्नास्त्येव परमार्थनिरूपणे ॥ १९

- is created upon the AtmA that is nothing but the cit, sukha, Ananta, paramAtma shivA. The works of mAyA exists only in this realm and has no role in proving the paramArtha.

अथ किं बहुनोक्तेन शिवादन्त्यन्न विद्यते ॥ २०

What is the point in telling more? There is nothing other than shiva!

शिवस्वरूपमेवाऽऽहु रिदं सर्वं विचक्षणाः ।

सर्वस्वरूपमज्ञानादृश्यते न तु वस्तुतः ॥ २१

The wise call everything as “shiva” svarUpA only. The different forms are visible only due to ajnAnA (ignorance) only but in reality they are one and the same (meaning all the forms/appearances are just an illusion)

एष एव हि मन्त्रार्थः सत्यं सत्यं न चान्यथा ।  
वैदाः सर्वे पुराणानि स्मृतयो भारतं तथा ॥ २२

This is the meaning of this ShadakShara mantra. This is the truth, verily the truth and nothing else. The vEdAs, purANAs, smRuti, mahAbhAratA,

अन्यान्यपि च शस्त्राणि तथा तर्काश्च सर्वशः ।  
शैवागमाश्च विविधा आगमा वैष्णवा अपि ॥ २३

other shAstrAs, tarka shastrA, shaivAgamA, vaiShNavAgamA,

अन्यागमाश्च विदुषामनुभूतिस्तथैव च ।  
अस्मिन्नर्थे स्वसंवेद्ये पर्यवस्यन्ति नान्यथा ॥ २४

Other AgamAs, the experiences of the learned (jnAnIs) – all automatically point to this meaning and nothing else.

बाध्यबाधकतां यान्ति व्यवहारे परस्परम् ।  
समुद्र इव कल्लोला इति वेदार्थसंग्रहः ॥ २५

In the material relation, they may appear to be contradictory but it is as contradictory as the waves within the ocean (they may appear to be contradicting but they in fact merge into the concept)

मन्त्रार्थः कथितः कृत्स्नः पुरश्चर्याऽधुनोच्यते ।  
आचार्यमुखतो मन्त्रं ज्ञात्वास्यार्थं समाहितः ॥ २६

The meaning of the mantra was explained and now the purashcarya vidhi is given in detail. The mantra should be received from the Guru along with the meaning.

यथाशक्ति धनं तस्मै प्रदत्वा तदनुज्ञया ।  
स्नानं त्रिषवणं कृत्वा भस्मना शाकभोजनः ॥ २७

Offer wealth to the Guru according to your capacity. After securing His permission, take bath three times a day, apply bhasmA, eat vegetables,

फलमूलाशनो वाऽपि हविष्याशी यथाबलम् ।  
पर्वताग्रे नदीतीरे सागरान्ते शिवालये ॥ २८

fruits, or havish. Seek out a mountain top, or a river bank, or an ocean bank, or a shivA temple

वने वा निर्भये शुद्धे प्राङ्मुखोदङ्मुखोऽपि वा ।  
समाहितमना भूत्वा सुखमासनमास्तिथः ॥ २९

or a forest, or any clean place, without fear, east / north facing, with a peaceful mind, sit on sukhAsanA.

प्राणायामत्रयं कृत्वा मुनिं छन्दस्तथैव च ।  
देवतां च तथा शक्तिं बीजं स्मृत्वा मनोरपि ॥ ३०

Perform pranayama thrice, perform the rishi, chandas, and dEvAtA nyAsA. Then think of the Shakti, and bljA of the mantra.

करन्यासं पुनः कृत्वा तथाऽङ्गन्यासमेव च ।  
पञ्चाङ्गमपि विन्यस्य गुरुं स्मृत्वाऽभिवन्द्य च ॥ ३१

Perform karanyAsA, anganyAsA and the pancAnga nyAsA. Think of the Guru and bow to Him.

हृत्पुण्डरीकमध्ये तु सौमसूर्याग्निमण्डले ।  
विद्युल्लेखेव कल्याणं ज्वलन्तं वह्निरूपिणम् ॥ ३२

In the midst of the heart lotus, on the mandalAs of moon, sun, and agni, that which is like the form of a lightning, peaceful, shining, and fire

शिवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं लक्षाणां षट् समाहितः ।  
तर्पयेल्लक्षमेकं तु जुहुयात्तु सहस्रकम् ॥ ३३

meditate on that shivA and chant the mantra six lakhs times. After that, perform the tarpana for 1 lakh times and perform the havan for 1000 times.

आज्येन पयसा वाऽपि पलाशकुसुमेन वा ।  
ततः सिध्यति मन्त्रोऽस्य भुक्तिमुक्तिफलप्रदः ॥ ३४

using the ghee or payasa or palAsha flowers. Then this mantra siddhi is attained and bestows material sukhAs in this world and salvation upon death.

अथवा साम्बमीशानं श्रीसदाशिवमेव च ।  
नृत्यमानं तथा देवं ध्यात्वा मन्त्रं तु साधयेत् ॥ ३५

Otherwise, meditate upon that sAmbA, IshvarA, and mahAdEvA as the one who is dancing (naTarAjA) and then do the japa.

अथवा प्राकृतं भावं स्वीयमुत्सृज्य सर्वदा ।  
शिवाऽहमिति संचिन्त्य साधयेदिदमुत्तमम् ॥ ३६

Otherwise, remove the thought that you are a jIvA and establish the fact that “I am none other than ShivA – shivOham” and then perform the mantra japa.

मन्त्रस्य साधनं प्रोक्तं विनियोगः प्रकीर्त्यते ।  
नित्यं द्वादशसाहस्रं जपेद्भक्त्या समाहितः ॥ ३७

The mantra sAdhanA methods were explained. Now viniyOga (application / usage) is explained. Those who chant this mantra thousand times everyday

सम्यग्ज्ञानप्लवं लब्ध्वा संसाराब्धिं तरिष्यति ।  
लक्षपञ्चाशतं जप्त्वा कारणेश्वरमाप्नुयात् ॥ ३८

will attain samyag jnAnA and will cross the ocean called saMsArA. Upon chanting this mantra 50 lakhs, a jlvA can become the kAraNa IshvarA.

लक्षाणां तु शतं जप्त्वा साक्षाद्रुद्रत्वमाप्नुयात् ।  
अशीतिलक्षं जप्त्वा तु नरो विष्णुत्वमाप्नुयात् ॥ ३९

Upon chanting it 100 lakh times, attains the rudrA state. Upon chanting 10 million lakhs, the jlvA can attain to viShNu state.

षष्टिलक्षजपेनैव लभते ब्रह्मणः पदम् ।  
चत्वारिंशतिभिर्लक्षैर्विराडात्मानमाप्नुयात् ॥ ४०

Upon chanting 60 lakh times, brahma state is attained. 40 lakh times would attain virAt state.

विंशल्लक्षजपेनैव दीर्घमायुरवाप्नुयात् ।  
षट्कर्माणि प्रसिध्यन्ति दशलक्षजपेन तु ।  
विनियोगः समाख्यातः पूजा देवस्य कीर्त्यते ॥ ४१

20 lakhs would fetch long life; those aspirants performing the japa for 10 lakhs would attain all the 6 karma siddhis. Thus the viniyOga was explained. Now the pUjA is being explained.

हृत्पद्मकर्णिकामध्ये मन्त्रेणानेन पूजयेत् ॥ ४२

On the middle of the hearth lotus, perform the pUjA using this mantra.

अथवा मण्डले सौरै चन्द्रमण्डलकेऽथवा ।

अग्नौ वा प्रतिमायां वां शिवां नित्यं प्रपूजयेत् । ४३

Otherwise, on the surya mandala, Chandra mandala, or agni mandala, or using a shivA idol, perform pUjA everyday.

आसनं प्रथमं दद्यादावाहनमनन्तरम् ।

अर्घ्यं ततं परं दद्यात्पाद्यं चैव ततः परम् ॥ ४४

First offer AsanA (seat); next offer (AvAhanaM), arghyam should be offered next. Then pAdyM.

पुनराचमनं दद्यात्स्नापयेत्तु ततः परम् ।

वासो दद्यात्पुनर्यज्ञोपवीतं भूषणानि च ॥ ४५

again, provide AcamanaM. Then, offer snAnA, and then yajnOpavItA and jewels.

गन्धं पुष्पं तथा धूपं दीपमोदनमेव च ।

माल्यमालेपनं दद्यान्नमस्कृत्य विसर्जयेत् ।

षडक्षरेण मन्त्रेण सर्वं कुर्याद्विचक्षणः ॥ ४६

Offer sandal, flowers, ghee, and garland, are offered and bow and surrender to the Lord using the ShadakShara mantra.

हृत्पद्मकर्णिकामध्यात्कुर्यादावाहनं बुधः ॥ ४७

In the midst of the heart lotus, the intelligent will perform AvAhanam.

उद्वासनं च तत्रैव नरः कुर्यात्समाहितः ।

सर्वभुक्तं समासेन नराणां भुक्तिमुक्तये ॥ ४८

Similarly udvAsanaM should also be performed equally. For the enjoyment of men, all these were explained.

तस्मात्सर्वं परित्यज्य षडक्षरपरो भवेत् ।  
षडक्षरेण सर्वाणि सिध्यन्त्येव न संशयः ॥ ४९

Renounce everything and simply chant this ShaDakShara. Have no doubt that by this mantra, all siddhis will be granted.

© Purnanandalahari.org ©

## जाबालोपनिषत्

ॐ पूर्णमद इति शान्तिः ॥

ॐ ब्रह्मस्पतिरुवाच ।

Shri brahaspathi asks yajnavalkya thus -

याज्ञवाल्क्यं यदनु कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम् ।

YajnavalkyA, which is kurukShEtrA, the place where dEvAs perform the yagjnAs, and which is the abode of brahman in all beings?

अविमुक्तं वै कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम् ।

YajnavalkyA replies thus – avimuktaM is the kurukShEtrA where dEvAs perform the yagjnAs, and that is the abode of brahman in all beings.

तस्माद्यत्र क्वचन गच्छति तदेव मन्येत तदविमुक्तमेव ।

Thus, wherever whoever goes, they shall contemplate that it is avimuktaM.

इदं वै कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम् ।

That this is the kurukShEtram where dEvAs perform the yagjnAs, and that is the abode of brahman in all beings.

अत्र हि जन्तोः प्राणभूत्क्रममाणेषु रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्याचष्टे  
येनासावमृति भूत्वा मोक्षी भवति तस्माद्विमुक्तमेव निषेवेत  
अविमुक्तं न विमुञ्चेदेवमेवैतद्याज्ञवल्क्यः ॥ १ ॥

This is the place where the prANA leaves the body. This is where RudrA gives the tAraka mantrOpadEshA, by acquiring that, jlvA attains the mOkShA. Hence everyone should preserve the avimukta and not leave it.

Upon hearing this, brahaspati instantly approved yAjnavalkyA's response.

अथ हैनं अत्रिः पप्रच्छ याज्ञवल्क्यं य एषोऽनन्तोऽव्यक्त  
आत्मा तं कथमहं विजानीयामिति ॥

Now, atri asks yAjnavalkyA “How do I experience this infinite and unmanifested AtmA?”.

स होवाच याज्ञवल्क्यः सोऽविमुक्त उपास्यो य एषोऽनन्तोऽव्यक्त  
आत्मा सोऽविमुक्ते प्रतिष्ठित इति ॥

YajnavalkyA responded – “That avimuktA should be worshipped. It is that avimuktA upAsanA that will lead one to experience the infinite and unmanifested Atma.”

सोऽविमुक्तः कस्मिन्प्रतिष्ठित इति । वरणायां नाश्यां च मध्ये प्रतिष्ठित इति ॥

Atri further questioned – “That avimuktA – Where is that established?”  
YajnavalkyA answered – “It is between vAraNA and nAshi”

का वै वारणा का च नाशीति ।

What is that vAraNA and what is that nAshi ?

सर्वानिन्द्रियकृतान्दोषान्वारयतीति तेन वरणा भवति ॥  
सर्वानिन्द्रियकृतान्पापान्नाशयतीति तेन नाशी भवतीति ॥

The dOshAs (faults) created by the actions performed by the indriyAs (pancha karmEndriyA and pancha jnAnEndriyAs) are removed (vArayati) and hence it is vAraNA.

The pApAs (sins) created by the actions performed by the indriyAs are erased (nAshayati) and hence it is called nAshi.

कतयं चास्य स्थानं भवतीति ।

Tell us where is this place ?

भ्रुवोर्घ्राणस्य च यः सन्धिः स एष द्यौर्लोकस्य परस्य च सन्धिर्भवतीति ।

It is at the intersection of the eyebrows and the nose. This exists are the intersection between the heaven and the earth.

एतद्वै सन्धिं सन्ध्यां ब्रह्मविद उपासत इति ।

This intersection is what is worshipped as sandhyA vandanA by the seekers of brahman

सोऽविमुक्त उपास्य इति ।

That avimuktA should be worshipped.

सोऽविमुक्तं ज्ञानमाचष्टे ।  
यो वैतदेवं वेदेति ॥ २ ॥

Those who experiences this avimuktA imparts the knowledge to others.

अथ हैनं ब्रह्मचारिण ऊचुः किं जप्येनामृतत्वं ब्रूहीति ।

The brahmachAris asked yAjnavalkyA thus – “Please tell us chanting of which mantra yields amRuta (mOkshA) state”.

स होवाच याज्ञवल्क्यः । शतरुद्रियेणेत्येतान्येव ह वा अमृतस्य नामानि ॥  
एतैर्ह वा अमृतो भवतीति एवमेवैतद्याज्ञवल्क्यः ॥ ३ ॥

YajnavalkyA replied – “Chanting of shatarudriyA is the only answer. It has the names of amRta (shivA). Hence it is the path of amRutatvA (mOkshA)” .

अथ हैनं जनको वैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसमेत्योवाच भवन्सन्यासं ब्रूहीति ।

Now, janakA, the king of vaidEhA approached yAjnavalkyA and prayed “Please explain about sanyAsA” .

स होवाच याज्ञवल्क्यः । ब्रह्मचर्यं परिसमाप्य गृही भवेत् ।  
गृही भूत्वा वनी भवेत् । वनी भूत्वा प्रव्रजेत् ।  
यदि वेतरथा ब्रह्मचर्यदिव प्रव्रजेद्गृहाद्वा वनाद्वा ।

YajnavalkyA replied – After fulfilling the ashramA of brahmacaryA (celibate), one can enter the grahastAsramA (householder life). After fulfilling the dharma of grahastA, one can enter the vAnaprastA. When a vAnaprastA feels that he is ready to give up everything, then he can take up the sanyAsA. It is also possible to take up sanyAsA directly from brahmacharyA, grahstA, and vAnaprastA.

अथ पुनरव्रती वा व्रती वा स्नातको वाऽस्नातको वोत्सन्नग्निको वा  
यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत् ।

In addition, whether a person follows the vratAs (disciplines of an ashramA) or not, went through proper education or not, whether he follows the proper agni kAryAs or not, the moment a person feels that he is ready to shed everything and take up sanyAsa, he is eligible to take it.

तद्धैके प्राजापत्यामेवैष्टि न कुर्वन्ति ।  
तदु तथा न कुर्यादाग्नेयीमेव कुर्यात् ।

Normally a sacrifice called prAjapatyA is recommended prior to taking up sanyAsa. This is yajnA, prajApati is the prime diety. But even this is not needed for the person who is ready to take up sanyAsa in a moment. He can just do a sacrifice where agni alone is the prime diety.

अग्निर्ह वै प्राणः प्राणमेव तथा करोति ॥

Since agni is the source for prANA, he strengthens the prANA.

त्रैधातवीयामेव कुर्यात् । एतयैव त्रयो धातयो यदुत सत्त्वं रजस्तम इति ॥

He should also person the tridhAtavlyA sacrifice. By this, the three dhAtu satva, rajas, and tamas are strengthened.

अयं ते योनिः ऋत्विजो यतो जातः प्राणदरोचथाः ।  
तं प्राणं जानन्नग्न आरोहाथा नो वर्धय रयिम् ।  
इत्यनेन मन्त्रेणाग्निमजिघ्रेत् ।

The renunciate chants the above mantra and offers the sacrifice to agni and takes the smoke within.

एष ह वा अग्नेर्योनिर्यः प्राणः प्राणं गच्छ स्वाहेत्येवमेवैतदाह ।  
ग्रामादग्निमाहृत्य पूर्वमग्निमाघ्रापयेत् ।

He shall thus make the offering for the agni to strengthen its source – prAnA. He shall perform thus by taking the agni from the village (the right person).

यद्यग्निं न विन्देदप्सु जुहुयात् । आपो वै सर्वा देवताः सर्वाभ्यो देवताभ्यो जुहोमि  
स्वाहेति हुत्वोद्धृत्य प्राश्नीयात्साज्यं हविरनामयं मोक्षमन्त्रः त्रय्यैवं वदेत् ।  
एतद्ब्रह्मैतदुपासितव्यम् । एवमेवैतद्भगवन्निति वै याज्ञवल्क्यः ॥ ४ ॥

If agni cannot be procured at that time, the sacrifice can be performed with water as well. Since water is verily all Gods, he can simply say “Oblations to all Gods svAhA” and drink the water mixed with ghee. Now, the mOkShamantra (OM) should be chanted thrice. He should now realize that this praNava is verily the brahman. Thus said yAjnavalkyA.

अथ हैनमन्त्रिः पप्रच्छ याज्ञवल्क्यं पृच्छामि त्वा याज्ञवल्क्य अयज्ञोपवीति कथं ब्राह्मण  
इति ।

Now, atri asks yAjnavalkyA – “Tell me Oh! yAjnavalkyA how can a person without the yajnOpavItA (sacred thread) considered a brahmAnA ?”

स होवाच याज्ञवल्क्यः । इदमेवास्य तद्वज्ञोपवीतं य आत्मापः प्राश्नाचम्यायं विधिः  
परिव्राजकानाम् ।

YajnavalkyA responds – For the renunciate, the understanding that the Atman is the brahman is the yajnOpavItA.

वीराध्वाने वा अनाशके वा अपां प्रवेशे वा अग्निप्रवेशे वा महाप्रस्थाने वा ।

For the kshatriyAs and like, liberation happens in the battlefield, or by fasting, or by taking jalasamAdhi, or getting into the fire, or by taking the great journey (death by exhaustion)

अथ परिव्राड्विवर्णवासा मुण्डोऽपरिग्रहः शुचिरद्रोही भैक्षणो ब्रह्मभूयाय भवतीति ।  
यद्यातुरः स्यान्मनसा वाचा संन्यसेत् । एष पन्था ब्रह्मणा हानुवित्तस्तेनैति  
संन्यासि ब्रह्मविदित्येवमेवैष भगवन्याज्ञवल्क्य ॥ ५ ॥

Now those renunciates, wearing saffron robes, shaven head, pure, practicing ahimsa by not injuring anyone physically and mentally, living in alms becomes eligible for walking the path of realizing brahman. If a person is suffering with end stage diseases and such, kShana sanyasA is possible by just uttering the mantrAs. This exemption has been prescribed by brahmA himself. Thus spoke yajnavAlkyA.

तत्र परमहंसानामसंवर्तकारुणिश्चेतकेतुदुर्वासऋभुनिदाघजडभरत  
दत्तात्रेयरैवतकप्रभृतयोऽव्यक्तलिङ्गा अव्यक्ताचारा अनुन्मत्ता  
उन्मत्तवदाचरन्तस्त्रिदण्डं कमण्डलुं शिष्यं पात्रं जलपवित्रं शिखां यज्ञोपवीतं च  
इत्येतत्सर्वं भूःस्वाहेत्यप्सु परित्यज्यात्मानमन्विच्छेत् ॥

There are those who are paramahaMsA's like samavartakA, AruNi, svEtakEtu, durvAsA, Rubhu, nidhAghA, jaDabhArata, dattAtrEya, Raivataka etc who do not have any distinct symbols or marks to identify themselves as paramahaMsAs. In fact, their behavior may look non sensical or not in alignment with AcArAs. They might even let go of their three dandAs, kamaNDalu, hair, bikShA pAtrA, jalapavitraM, sacred thread, etc by just chanting "bhU svAhA" and remain constantly in a realized state.

यथा जातरूपधरो निर्ग्रन्थो निष्परिग्रहस्तत्तद्ब्रह्ममार्गे

Just like a new born (who does not even have an identity – no name is assumed), with no knowledge, upon renunciation, walking in the path of brahman

सम्यक्सम्पन्नः शुद्धमानसः प्राणसन्धारणार्थं

treating everything as equal, with a pure mind, eating for the sake of living

यथोक्तकाले विमुक्तो भैक्षमाचरन्नुदरपात्रेण लाभालाभयोः समो भूत्वा

when hungry, treating the stomach as the pAtra, indifference towards gains and losses

शून्यागारदेवगृहतृणकूटवल्मीकवृक्षमूलकुलालशालाग्—

staying in a empty house, or a temple, or grassland, under a tree, or a potters hut.

—निहोत्रगृहनदीपुलिनगिरिकुहरकन्दरकोटरनिर्झरस्थाण्डिलेषु

Or a house where agnihOtrA is performed, river banks, mountain, tree home, near a water fall, or a field

तेष्वनिकेतवास्य प्रयत्नो निर्ममः शुक्लध्यानपरायणोऽध्यात्मनिष्ठोऽशुभकर्मनिर्मूलनपरः  
संन्यासेन देहत्यागं करोति स परमहंसो नाम परमहंसो नामेति ॥ ६ ॥

making no effort to gain anything, without any mamakArA (no sense of possession)  
constantly meditating on brahman, devoted to the Atman, constantly resolving all  
karmas (good or bad deeds) and finally gives up the body in the state of renunciation –  
that is paramahaMsA ! He is called paramahaMsA.

ॐ पूर्णमद इति शान्तिः ।



सदाशिव श्री पादुकां पूजयामि नमः

### षडाक्षर मन्त्र जप क्रमः

अस्य श्री षडाक्षर महामन्त्रस्य ।  
वामदेव ऋषिः । पङ्क्तिः छन्दः । ईशान देवता ।  
ॐ बीजं नमः शक्तिः शिवायेति कीलकं  
सदाशिव प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः ॥

मूलेन त्रिः व्यापकं ।

#### करन्यासं

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।  
नं तर्जनीभ्यां नमः ।  
मं मध्यमाभ्यां नमः ।  
शिं अनामिकाभ्यां नमः ।  
वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।  
यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

#### अङ्गन्यासं

ॐ हृदयाय नमः ।  
नं शिरसे स्वाहा ।  
मं शिखायै वषट् ।  
शिं कवचाय हुं ।  
वां नेत्रत्रयाय वौषट् ।  
यं अस्त्राय फट् ।

ॐ भूर्भुवस्वरो इति दिग्बन्धः

## ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रवतंसं  
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।  
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणै व्याघ्रकृत्तिं वसानं  
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारुपद्मासनस्थं  
वामाङ्गारूढगौरीनिबिडकुचभराभोगगाढोपगूढम्  
सर्वालङ्कारकान्तं वरपरशुमृगाभीतिहस्तं त्रिणेत्रं  
वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदनगुहास्लिष्टपार्श्वं महेशम् ॥

## पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि ।  
हं आकाशात्मने पुष्पाणि कल्पयामि ।  
यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि ।  
रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि ।  
वं अमृतात्मने अमृतं नैवेद्यं कल्पयामि ।  
सं सर्वात्मने ताम्बूलादि समस्तोपचारान् कल्पयामि ।

## मूल मन्त्रः

ॐ नमः शिवाय ।

## अङ्गन्यासं

ॐ हृदयाय नमः ।

नं शिरसे स्वाहा ।

मं शिखायै वषट् ।

शिं कवचाय हुं ।

वां नेत्रत्रयाय वौषट् ।

यं अस्त्राय फट् ।

ॐ भूर्भुवसुवरो इति दिग्विमोगः ।

## ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रवतंसं  
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।  
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणै व्याघ्रकृत्तिं वसानं  
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारुपद्मासनस्थं  
वामाङ्गारूढगौरीनिबिडकुचभराभोगगाढोपगूढम्  
सर्वालङ्कारकान्तं वरपरशुमृगाभीतिहस्तं त्रिणेत्रं  
वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदनगुहास्लिष्टपार्श्वं महेशम् ॥

## पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि ।

हं आकाशात्मने पुष्पाणि कल्पयामि ।

यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि ।

रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि ।

वं अमृतात्मने अमृतं नैवेद्यं कल्पयामि ।

सं सर्वात्मने ताम्बूलादि समस्तोपचारान् कल्पयामि ।



सदाशिव श्री पादुकां पूजयामि नमः

## षडक्षर आवरण पूजा क्रमः

### पीठ पूजा

ॐ मण्डूकादि परतत्त्वान्त देवतायै नमः ।

ॐ वामायै नमः ।

ॐ ज्येष्ठायै नमः ।

ॐ रौद्र्यै नमः ।

ॐ काल्यै नमः ।

ॐ कलविकरिण्यै नमः ।

ॐ बलविकरिण्यै नमः ।

ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ।

ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ।

ॐ मनोन्मन्यै नमः ।

महावाराह्यम्बा आवाहनम् –

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रवतंसं  
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।  
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणै व्याघ्रकृत्तिं वसानं  
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारुपद्मासनस्थं  
वामाङ्गारूढगौरीनिबिडकुचभराभोगगाढोपगूढम्  
सर्वालङ्कारकान्तं वरपरशुमृगाभीतिहस्तं त्रिणेत्रं  
वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदनगुहास्लिष्टपार्श्वं महेशम् ॥

व्यापक न्यासः

ॐ नमस्तेस्तु स्थाणुभूताय ज्योतिर्लिङ्गामृतात्मने ।  
चतुर्मूर्तिवपुःस्थाय भसिताङ्गाय शम्भवे ॥

ॐ नमः शिवाय । – ७ वारं व्यापकं कुर्यात् ।

पञ्चमूर्ति न्यासः

ॐ नं तत्पुरुषाय नमः । – पूर्ववक्त्रे  
ॐ मं अघोराय नमः । – दक्षिणवक्त्रे  
ॐ शिं सद्योजाताय नमः । – पश्चिम वक्त्रे  
ॐ वां वामदेवाय नमः । – उत्तर वक्त्रे  
ॐ यं ईशानाय नमः । – ऊर्ध्व वक्त्रे

ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिवाय नमः । आवाहितो भव । – आवहन मुद्रां प्रदर्शय  
ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिवाय नमः । स्थापितो भव । – स्थापण मुद्रां प्रदर्शय  
ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिवाय नमः । संस्थितो भव । – संस्थितो मुद्रां प्रदर्शय  
ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिवाय नमः । सन्निरुद्धो भव । – सन्निरुद्ध मुद्रां प्रदर्शय  
ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिवाय नमः । सम्मुखी भव । – सम्मुखी मुद्रां प्रदर्शय  
ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिवाय नमः । अवकुण्ठितो भव । – अवकुण्ठनमुद्रां  
प्रदर्शय  
ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिव श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ – वन्दन देनु योनि  
मुद्रांश्च प्रदर्शय

यथा शक्ति षोडश उपचार पूजा पञ्चोपचार पूजा वा कुरुत ।

(Do Shodasa upacara puja or panchopacara depending on the time and convenience)

### षडङ्ग तर्पणम् -

ॐ हृदयाय नमः । हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
नं शिरसे स्वाहा । शिरो शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
मं शिखायै वषट् । शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
शिं कवचाय हुं । कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
वां नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
यं अस्त्राय फट् । अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

### लयाङ्ग तर्पणम् -

ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (१० वारम्)

### प्रथमावरणम्

ॐ नं ईशानाय नमः । ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ मं तत्पुरुषाय नमः । तत्पुरुष श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ शिं अघोराय नमः । अघोर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ वां वामदेवाय नमः । वामदेव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ यं सद्योजाताय नमः । सद्योजात श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः प्रथमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

अनेन प्रथमावरणार्चनेन श्री सदाशिव प्रीयथाम् ।

### द्वितीयावरणम्

ॐ नं निवृत्यै नमः । निवृती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ मं प्रतिष्ठायै नमः । प्रतिष्ठा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ शिं विद्यायै नमः । विद्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ वां शान्त्यै नमः । शान्ता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ यं शान्त्यातीतायै नमः । शान्त्यातीता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः द्वितीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

अनेन द्वितीयावरणार्चनेन श्री सदाशिव प्रीयथाम् ।

### तृतीयावरणम्

ॐ अनन्ताय नमः । अनन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ सूक्ष्मायै नमः । सूक्ष्मा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ शिवोत्तमायै नमः । शिवोत्तमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ एकनेत्रायै नमः । एकनेत्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ एकरुद्राय नमः । एकरुद्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ श्रीकण्ठाय नमः । श्रीकण्ठ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ शिखण्डिने नमः । शिखण्डि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः तृतीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तृतीयावरणार्चनेन श्री सदाशिव प्रीयथाम् ।

तुरियावरणम्

ॐ उमायै नमः । उमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ चण्डेश्वराय नमः । चण्डेश्वर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ नन्दिने नमः । नन्दि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ महाकालाय नमः । महाकाल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ गणेश्वराय नमः । गणेश्वर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ वृषभाय नमः । वृषभ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भृङ्गिने नमः । भृङ्गी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ स्कन्दाय नमः । स्कन्द श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः तुरियावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तुरीयावरणार्चनेन श्री सदाशिव प्रीयथाम् ।

### पञ्चमावरणम्

ॐ लं इन्द्राय नमः । इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ रं अग्नये नमः । अग्नि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ टं यमाय नमः । यम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ क्षं निऋतये नमः । निऋति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ वं वरुणाय नमः । वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ यं वायवे नमः । वायु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कुं कुबेराय नमः । कुबेर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ हौं ईशानाय नमः । ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ आं ब्रह्मणे नमः । ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः । अनन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः पञ्चमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

अनेन पञ्चमावरणार्चनेन श्री सदाशिव प्रीयथाम् ।

## षष्ठावरणम्

ॐ वं वज्राय नमः । वज्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ शं शक्तये नमः । शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ दं दण्डाय नमः । दण्ड श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ खं खड्गाय नमः । खड्ग श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ पं पाशाय नमः । पाश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ ध्वं ध्वजाय नमः । ध्वज श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ गं गदायै नमः । गदा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः । त्रिशूल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ पं पद्माय नमः । पद्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ चं चक्राय नमः । चक्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः षष्ठावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः  
सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ नमः शिवाय । श्री सदाशिव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥  
अनेन षष्ठावरणार्चनेन श्री सदाशिव प्रीयथाम् ।

## पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि ।  
हं आकाशात्मने पुष्पाणि कल्पयामि ।  
यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि ।  
रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि ।  
वं अमृतात्मने अमृतं नैवेद्यं कल्पयामि ।  
सं सर्वात्मने ताम्बूलादि समस्तोपचारान् कल्पयामि ।

## **bhrahmarAmbikA**

bhrahmarAmbikA is one of the 51 Shakti plThA's and is considered as one of the important 18 plthAs. Sati's neck is believed to have fallen here. The temple is situated on the banks of river kriShNA in the city of srisailam. This is the Shakti of the famous mallikArjunA. This temple is within the shrisailam temple complex. There are a few Shakti plthAs where the Shakti plthA would also be a jyOtirlinga sthalA. Srisailam happens to be one of them. MallikArjunA is a jyOtirlinga and bhramarAmbA is a Shakti plthA.

There is a beautiful idol and with the alankArAs, you wouldn't feel like taking your eyes away from Her. One can constantly hear shrichakra pUjanA with khaDgamAlA chanting in front of the main shrine.

There is also a legend that dEvi durga took the form of bramari (bee) to kill aruNAsurA who got a boon from brahmA that he cannot be killed by two and four legged living beings. We can also see the reference of bhrAmari in the 11<sup>th</sup> chapter of durgAsaptashati. Even though all the Goddess mentioned in the later part of this chapter (Shakambhari, shatAkShi, bhImA, and bhrAmari) are all found at one place at a temple in Saharanpur (the famous mA shAkambhari temple), the srisailam shakti plth houses only bhramarAmbikA.

There are many more temples around this area and any devotees planning to visit shrisailam should plan at least two to three days to cover all the temples in and around shrisailam. Devotees should also make sure that they take the time to visit mahA nandi (which is about 3-4 hrs in car) from srisailam.

For more information please visit: <http://srisailamtemple.com/srisailam/index.html>

## सदा विद्याऽनुसंहतिः

- 1. How are parayanaa's important in sadhana, what is their aggregate number, any special parayana is there?**

Parayana is an important part of tantric sandhya – there are four parayanas associated with three sandhyas- the Natha, ghatika, tattva and nityaa. Other than these the mantra and 'naama' parayanaa are seen in practice.. Mere repetition on japa counts will lead to a mechanical, dry monologue in sadhana. Hence for the mind to be attentive and focussed on the japa these parayanas are insisted. In a tantra called saubhagya tantra we find thirty six varieties of parayanas. In Paramaananda tantra we find the special parayana called śrī cakra parayana , in saubhagya kalpadruma a more complex parayana called kaala cakra paarayana is seen- these are apart from the thirty six already seen. A main identity of all the parayanas is that they are cyclic in nature. So a real focus to keep the track is needed by the sadhaka indulging in parayanas.

- 2. One of the five parvA days of naimittika is mAsa saMkranaNa. If the saMKramaNa occurs in nights or early mornings how to perform the saparya?**

According to astrology the samkramana occurs at a particular minute, so it is difficult to pin point the time for saparya, there are vyAptis- time slots before and after each mAsa saMkranmaNa said there in (astrology), it can be seen in the following table.

| Hours .<br>Min | <i>Purva vyapti</i><br>(nazhikai) | <i>Masa</i> | <i>Uttara vyapti</i><br>(nazhikai) | Hours<br>. Min |
|----------------|-----------------------------------|-------------|------------------------------------|----------------|
| 4.00           | 10                                | mesha       | 10                                 | 4.00           |
| 6.24           | 16                                | rishabha    | **                                 | **             |
| **             | **                                | mithuna     | 16                                 | 6.24           |
| 12.00          | 30                                | kataka      | **                                 | **             |
| 6.24           | 16                                | simha       | **                                 | **             |
| **             | **                                | kanya       | 16                                 | 6.24           |
| 4.00           | 10                                | tula        | 10                                 | 4.00           |
| 6.24           | 16                                | vrischika   | **                                 | **             |
| **             | **                                | dhanur      | 16                                 | 6.24           |
| **             | **                                | makara      | 24                                 | 9.36           |
| 6.24           | 16                                | kumba       | **                                 | **             |
| **             | **                                | meena       | 16                                 | 6.24           |

We can choose a time which falls in the above time slot for the naimittika saparya of mAsa saMkramaNa. If it coincide with the nitya saparya of the daytime, then the Avarana pooja is done a second time after offering small naivedya at the end of the first round. The special offerings are to be made at the end of second avarana pooja . Else, do the prayascitta of 108 japa for the nitya saparya and perform the special naimittika arcana.

3. Is it not sufficient to adopt the procedures and instructions received from the Guru, besides searching matters from various sources? How to arrest the cancala buddhi (doubts) from sthira buddhi, consequent on knowing the matters from other sources?

The question on non-revelation of Lalita sahasranama by Lord Hayagriva (Guru) to his shishya (Sage Agastya), shows us an intrinsic rule, 'To ask'. Now a question arises, if we don't know that such a thing exists, how will we ask? The answer was to perform tapasya- penance, with single pointed devotion. You will be inspired to ask the question. Now, if we examine the above question in this context, we find that just simply leaving all to the Guru and doing no inquiry will not result in the sadhaka getting higher experiences.

Thus searching from various sources also can be a type of tapasya wherein, you may be inspired to ask your guru for guidance and clarity in a particular aspect thus taking the sadhaka to newer heights of Devi's experience.

© Purnanandalahari.org ©

எண்ணா யிரத்தாண்டு யோகம் இருக்கினும்  
கண்ணார் அமுதினைக் கண்டறி வாரில்லை  
உண்ணாடிக் குள்ளே ஒளியுற நோக்கினால்  
கண்ணடி போலக் கலந்துநின் றானே

- திருமந்திரம் 603



Eight thousand years of yOgA dear  
Might not take you to Her near  
Light you seek within you clear  
Right like mirror you merge full gear